International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 24-07-2025, Accepted: 23-08-2025, Published: 08-09-2025
Volume 11, Issue 3, 2025, Page No. 72-74

चरण सिंह पथिक की कहानियों में स्त्री दुर्दशा का चित्रण

अशोक कुमार[1], डॉ रामकृष्ण शर्मा[2]
[1]शोधार्थी हिंदी विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत
[2]शोध निर्देशक, हिंदी विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
यह शोध पत्र चरण सिंह पथिक की कहानियों के स्त्री पात्र की दुर्दशा का चित्रण करता है। विशेषताः ग्रामीण नारी की मानसिक, सामाजिक व आर्थिक स्थिति का यथार्थ विश्लेशण करता है। ग्रामीण महिलाओं के साथ होने वाले अत्याचार एवं दुर्दशा का चित्रण है। ग्रामीण नारी अबला, निसक्त, असहाय रूप में नजर आती है। साथ ही घरेलू कार्यों तथा खेत–खलियान के कार्यों एवं परिवार के देख–रेख में अपना पूरा जीवन खफ़ा देती है जैसे– ग्रामीण बालिका के लिए उच्च शिक्षा प्राप्ति में परिवार की रूढ़ीवादी मानसिकता बाधा उत्पन्न करती है। अकेली नारी तथा विधवा नारी बाहर तथा घर के अन्दर कहीं भी सुरक्षित नही है। उसके यौवन पर कुदृष्टि परिवार के सदस्यों की भी रहती है। पुत्रवधु के साथ होने वाले शोषण, अत्याचार एवं अन्याय में सास भी लिप्त है। वहीं ग्रामीण नारी के सशक्त क्रान्तिकारी संघर्षशील रूप को भी चित्रित किया गया है तथा इसमें नारी के दया, प्रेम, ममता, त्याग तथा परोपकार की भावना को भी दर्शाया गया है।

मूल शब्दः दासी, भोग्या, दुर्दशा, यथार्थ, उपेक्षा, प्रताड़ित, त्रासदी, सौतन, विद्रोही, सषक्त, संवेदनाएं, रंगभेद, दोगलापन।

भारतीय समाज में स्त्री का स्थान सदैव पूजनीय रहा है। यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता जैसी उक्तियों के माध्यम से स्त्री को सम्मान देकर और पूजनीय बताकर समाज में स्त्री के साथ सद्व्यवहार करने जैसी बात भी होती है। वहीं स्त्री पीड़ा साहित्य का विषय रहा हैं। आज के दौर में जब महिला समानता की बात होती है और स्त्री अधिकारों की बात हर ओर होती है तो भला साहित्य उससे अछूता कैसे रहे। हिंदी साहित्य की प्रत्येक विधा स्त्री के चित्रण के बिना अधूरी है। चाहे कहानी हो, कविता या नाटक।

हर विधा में स्त्री जीवन मुखर है। पथिक की कहानियों में स्त्री के कई रूप हमारे सामने आते हैं।

किसी भी समाज की सृजना पुरुष अकेले नहीं कर सकता है। वहाँ स्त्री भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। स्त्री परिवार और समाज की रीढ़ हैं। दृष्टव्य है कि ''भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान एकाकी है, उत्तम है, स्नेह, ममता और प्रेम का प्रतीक है। वह मानव जीवन का रस है, अमृत है और प्राण है।''[1] जहां नारी को एक ओर आदर्शमयी महान बताया जाता है–तो वहीं दूसरी ओर व्यवहार के स्तर पर उसे सदा एक दासी और भोग्या ही समझा जाता रहा हैं। – "कहा जाता है कि नारी की दासता का इतिहास उत्तर वैदिक काल से शुरू हुआ था और आज के इस वैज्ञानिक युग में भी नारी एक हद तक उपेक्षित ही है। औरत को मात्र भोग की वस्तु समझकर इसके प्रति वासनात्मक दृष्टि रखने की आदिम मानसिकता आज के सभ्य एवं शिक्षित पुरुष समुदाय में भी पायी जाती है।"[2]

उल्लेखनीय है कि नारी जीवन को धर्म, परंपरा और नैतिकता के बहाने हमेशा सीमित और संकुचित करने का प्रयास होता रहा है। देश की आजादी के बाद में नारी के एक वर्ग को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्तर पर पुरुषों के सम स्तर आने का मौका मिला है। नारियों में शिक्षा तथा अपने अधिकारों को प्राप्त करने की भावना प्रबल होती है। – "स्वतंत्रता संग्राम ने युगों की सशक्त नारी के कानों में जागरण का संदेश फूंका। परिणामस्वरूप चिर संतप्त नारी हृदय में नवचेतना की चिनगारी प्रज्ज्वलित हो उठी।''[3] लेकिन यह अवसर नगरीय स्त्रियों तक ही केन्द्रित रहा है। स्वतंत्रता के पश्चात् ग्रामीण स्त्रियों का जीवन अधिकतर चूल्हा चौकों, खेत–खलिहानों और पति–बच्चों के आस–पास ही रहा है। ग्रामीण नारी की शिक्षा सीमित स्तर पर रही है। ग्रामीण नारी साक्षरता तक सीमित रही है। ग्रामीण नारी को अपनी इच्छाओं तथा स्वतंत्र विचारों को पनपने तथा व्यक्त होने का अवसर ही प्राप्त नहीं होता है। स्त्रियां दहेज प्रथा, गृह हिंसा, बाल–विवाह, विधवा, यौन उत्पीड़न, सामाजिक कुरीतियों के नीचे दबा दी जाती है।

गौरतलब है कि पथिक जी कहानियों में ग्रामीण सामाजिक जीवन के यथार्थ स्वरूप स्त्री जीवन का समस्यामूलक पक्ष दृष्टव्य हैं। पथिक जी की कहानियों में विवाह के आड़ में नारी पर थोपी जाने वाली सामाजिक कुरीतियों तथा प्रेम के नाम पर उनके दैहिक शोषण के चित्र दृष्टव्य है।

पथिक जी की 'बक्खड़' कहानी में ऊँचे खानदान के घर से रिश्ता जोडना निम्न खानदान वाले परिवार की लड़की के साथ भारी गलती या जैसे अपराध हो गया। उस स्त्री ने जीते–जी नरक भोगा था। उसके पति को सरकार में उच्च पद मिल गया था। बस, उसी दिन से बुरे दिन शुरू हो गए थे। उस स्त्री की घोर उपेक्षा, तीखे जहर–बुझे बोल के प्रहार उसका पति एवं सास करते हैं। ग्रामीण स्त्री इन सभी घोर उपेक्षाओं और प्रताड़ना को झेलते हुए अपने ससुराल में रोज–मर्रा के कार्य में लीन थी। यह सब सहन होने वाले पुत्र के लिए कर रही थी। जैसा की कहानी में उस स्त्री के पुत्र का कथन है – "फिर मेरा पेट में आना, मां का सवेरे जल्दी उठाना, आटा पीसना, झाड़ू लगाना, गोबर डालना, कंडे थापना, पानी लाना, दोपहर में रोटी बनाना, बीच–बीच में सास–ससुर की झिडकी फिर शाम हो जाना, माँ कोल्हू का बैल बनकर जीने पर मजबूर थी मेरे लिए। बाप ने तो माँ से बोल–चाल तक बंद कर दी थी। दादी का मां के हाथ से रोटियां छीन लेना। मां प्रतिरोध करती तो दादी दहाड़ती। तेरा बाप कमा के रख गया है क्या ? बापखाणी मरी नहीं तू नकटी रांड।"[4]

स्त्री के साथ परिवार के लोग ही अमानवीय अत्याचार करते है। स्त्री घरेलु हिंसा को कुंठित होते हुए चुपचाप स्वीकार लेती है। "बक्खड़" कहानी में पथिक जी ने चित्रित किया कि एक स्त्री सास के रूप में अपनी पुत्रवधु की जान की दुश्मन बनी हुई। सास पुत्रवधु के प्रति संवेदनहीन है। सास अपनी पुत्रवधु को अपने पुत्र से पीटवाने में कोई कसर नहीं रखती हैं। – "बापू के

खौफ से माँ बकरी की तरह मिमियाने लगती। मगर सब बेकार जाता। जो भी हाथ लगता, माँ रुई की तरह धुन दी जाती। मां मुझे पेट में लिए गाय–सी डकराती। होश ही नहीं रहता। पड़ोसी आकर जैसे–तैसे बचाते। मगर कब तक ? कई–कई दिनों तक माँ को भूखा रखा जाता। दिन–भर काम करवाया जाता।

शरीर का कोई हिस्सा ऐसा नहीं था, जहां दानवीय चिह्न नहीं हो । कंधे, बगल, पिण्डली एवं शरीर के तमाम जोड़ बुरी तरह दर्द करते।[5]

जब स्त्री ससुराल बालों के अन्याय और अत्याचार से प्रताड़ित होकर अपने पीहर आती है तो वहाँ पर भी माँ–बाप लोक–लाज डर से बेटी को पीहर में अधिक दिन नहीं रखना चाहते है। यह भी नारी जीवन की त्रासदी हैं। उसकी माँ एक अनगढ़ पीड़ा से कराह उठती, "लेकिन बाप के घर बेटी कब तक धिकेगी.....? अगर बाल–बच्चा यहीं हो गया तो..... जात बिरादरी में क्या मुंह दिखाएंगे ?"[6]

स्त्री के ससुराल वाले उसके साथ बुरा बर्ताव करने पर भी पीहर पक्ष वाले झुके रहते हैं। ताकि उसकी बेटी को जैसे–तैसे वहाँ रखे। स्त्री का पुत्र कहता है– "और एक दिन नानाजी बाबा के पास गए। मैं जानता हूँ नानाजी ने हाथ जोड़े होंगे। अपनी पगड़ी बाबा के पैरों में डालकर बेटी को अपनाने की भीख मांगी होगी।''[7]

स्त्री जीवन की मजबूरी तथा दबे–कुचले जीवन का यथार्थ चित्रण मिलता है। जिस ससुराल वालों की यातना, पीड़ा, नारकीय जीवन, पति द्वारा उपेक्षा सौतन को लेकर एक नारी कब सहन करे । आखिर स्त्री ने घर छोड़ना ही उचित समझा। फिर पीहर पक्ष वालों ने लोक लाज से डरकर बेटी का दूसरे के यहाँ नाता करवाया। ''और इसी का प्रतिफल हुआ – माँ का बीस हजार में सौदा होकर नाते जाना।''[8]

पथिक जी की कहानियों में यहां स्त्री केवल लाचार, असहाय, अबला नहीं है अपितु विद्रोही, सशक्त, अन्याय का विरोध करने वाली बोल्ड नारी रूप में चित्रित है। पथिक की ग्रामीण जीवन की कहानी "कलुआ" की मुख्य एक स्त्री पात्र 'कलावती' के व्यक्तित्व का सशक्त चित्रण नजर आता है। –

"बोलने में इतनी तेज और खरी कि कब क्या बक दे, कोई पता नहीं। सामने वाला बात कहीं से शुरु करता और कलावती उसी बात को इतने मोड़ों पर ले जाती कि भटकने वाला भटककर रह जाता। जब खत्म करती तो कबीर की एक–दो साखी ऊपर से और सुनाकर उसका दम खुश्क कर देती।"[9]

कलावती का पति मांग्या कबीर पंथी था। वह घर छोड़कर भाग गया। जेठ और देवर दोनों की नजर उसके शरीर पर रहती। शाम को नशे में धुत्त दोनों ही उसकी फिराक में रहते। मगर कलावती हाथ नहीं रखने देती। हद तो यह थी कि उसकी बूढ़ी सास भी उसे दोनों में किसी एक की चादर ओढ़ने को कहती" अकेली औरत कब तक करवट बदलेगी कलावती.? धूड़िया तेरा देवर ठहरा। उसी को कर ले.।"[10]

"मैं कोई विधवा नहीं हूँ। खसम ने घर छोड़ा है, देह नही। कभी तो आएगा निपूता.। कलावती को बूढी सास को बरजकर कहती। बूढी सास फिर आगे नहीं कह पाती।

कलावती पति परायण है और अपनी सतीत्व की स्वयं रक्षक है। किसी की मजाल है की उसके प्रति गलत हरकत करें।

एक रात को कलावती के देवर–जेठ ने मिलकर उसे दबोचना चाहा तो वह कुल्हाड़ी उठाकर बिफर पड़ी,, "आज के बाद फिर ऐसी हरकत मत करना, वरना दोनों के बुरका–बुरका करके नाले में डाल दूंगी।"[11] उसने गुस्से में काँपते हुए पूरी ताकत से कुल्हाड़ी का भरपूर वार घर के किवाड़ पर किया। फिर बाएं पाँव की भरपूर लात मारी। किवाड़ रात के सन्नाटे को चीरता हुआ भरभराकर गिर पड़ा। उसने एक पाँव गिरे हुए किवाड़ पर जमाकर कहा, "आज के बाद मेरे हिस्से के घर में किवाड़ भी नहीं लगेगा। जिसकी माई ने दूध पिलाया हो वो आए मेरे पास ''[12]

पथिक जी की एक–एक कहानी में कई संवेदनाएँ, समस्याएँ संदेश, शिक्षा होती है। इनकी कहानियों में स्त्री को रंभ भेद की टिप्पणियों से सामना करना पड़ता है। रंगभेद एक सामाजिक समस्या है जो लंबे समय से हमारे समाज में में देखने को मिलती है। रंगभेद व्यक्ति के आत्मसम्मान, मानसिक स्थिति, और उसके व्यवहार पर बुरा प्रभाव डालती है। समाज में यह एक लंबी समय से चली आ रही धारणा है जिसमें गोरी त्वचा सर्वश्रेष्ठ सुंदर और सफल होती हैं। वही सांवली त्वचा असफल और हीनता का नाम दे दिया जाता है।

शादी और रिश्तों में रंगभेद जैसी चुनौतियां हमेशा देखने को मिल जाती है। इस सोच की जड़े गहराई से समाज में जमी हुई। यह विशेष रूप से महिलाओं के लिए हानिकारक होता है। गोरे रंग वाली स्त्री को अधिक आकर्षक माना जाता है। वही काले रंग की स्त्री को उपेक्षित कर दिया जाता हैं या उन्हें सक्षम नहीं समझा जाता है। पथिक जी की " कलुआ" कहानी में स्त्री पात्र कलावती पर उसकी देवरानी रंगभेद की टिप्पणी को जब वह जीवन भर नहीं भूल पाई। "उस रात सुबह तक जो बितंडा हुआ, उसे कलावती आज तक नहीं भूल पाई। उसकी देवरानी ने उस रात जो ताना मारा, वह आज तक उसके गले में फाँस बनकर अटका हुआ है। उसने कहा था, "तुम जैसी काली, कलूटी को कौन मर्द सूँघेगा. ऐसी ही है तो काहे भगाया अपने मर्द को। सिंगार–पहार तो ऐसी करती रहती है जैसे किसी को खा जाएगी। ऊपर से नखरे करती है छिनाल।''[13]

रंगभेद की टिप्पणी 'बक्खड़' कहानी में सास अपनी पुत्रवधु पर करती हुई अपने पुत्र को कहती हैं – 'संभाल इस कलूही को । अरे तेरे तो भाग ही फूट गए।"[14]

एक स्त्री का दूसरी स्त्री के प्रति संवेदनाहीन व्यवहार का चित्रण हैं। हमारे समाज में देखा जाए तो सास अपनी पुत्रवध के साथ अच्छा बर्ताव नहीं करती है। सास अपनी पुत्रवधु का शोषण करने में नहीं चुकती है। माँ चाहती है कि उसका बेटा अपनी पत्नी को वश में रखें। उससे घर के सारे कार्य करवाएं। चाहे वह बीमार की स्थिति में हो तो भी। पथिक जी की ऐसी ही कहानी "बीमार" में प्रमोद जैसे ही गौना करके आया तो सभी उसको हिदायत देते है। उसकी भाभी कहती है, "लालाजी, देवरानी को दबा के रखना। पहले दिन ही तुम्हारा पलड़ा नीचे रहा तो जिन्दगी भर कान पकड़े बकरी की तरह म्यं – म्यं करते रहोगे।''[15]

वही उसके दोस्त की ख्वाहिश का जिक्र है – "ओय प्रमोदया स्साले सेर रहना। कहीं हमारी मिट्टी पलीद मत करवा देना।" उसकी माँ ने बड़ी ममतामयी आवाज में समझाया था, "बेटा, बहू को हमेशा अपने वश में रखना।''[17]

प्रमोद की पत्नी का देवर विनोद से विवाद हो जाता है। प्रमोद अपनी पत्नी को मारने पीटने लग जाता है और कहता है – "मादर की कुतिया बहस करती है।" और तडाक से अपनी पत्नी के गाल पर पंजा छाप दिया । कमजोर पत्नी भरभरा कर के ढह गयी। आवाज सुनकर उसकी माँ आयी। माजरा देख कर बोली "इसने तो अपनी हया शरम बेच खायी । न देवर देखती है न ससुर.।''[18]

प्रमोद को लगा कि माँ जिस अधिकार के लिए पिताजी से आजीवन संघर्ष करती रही, उसी अधिकार से बहु को क्यों वंचित रखना चाहती है ? यह खूब समझता है कि घर में बहुत–कुछ गलत हो रहा है। पत्नी इसी क्लेश में मरीज बन चुकी थी। उसे माँ और पिताजी के बीच होने झगड़े बखूबी याद है। प्रमोद कहानीकार है। जब साहित्यिक संगोष्ठी से घर आया तो पत्नी ने पूछा। – "कैसा रहा कहानी–पाठ ?

"ठीक रहा।"

"औरतों के पक्ष में अच्छा लिखते हैं आप ?"

हां .।" उसे जैसे अंगारा छू गया।
"मगर घर में कभी झाँक कर नहीं देखा..।
वह बोलता–बोलता थम गया। जीभ तालू से चिपक गयी।
पथिक जी ने स्त्री के साथ होने वाला दोगलापन व्यवहार के प्रति एकदम सटीक तंज किया।
ग्रामीण समाज के बुजुर्ग पुराने रुढ़िवादी मानसिकता से ग्रस्त है। एक परिवार में लड़की ने महाविद्यालय की प्रथम वर्ष में प्रवेश लिया तथा उसका चित्रकार बनने का सपना था। वहीं उस लडकी का दादा उसका रिश्ता तय कर देते हैं। स्त्री शिक्षा, तथा सपने की चिंता व्यक्त करते हुए पथिक जी की कहानी 'वेरी के पेड़' में चित्रण करते है –

चाय के साथ पत्नी ने पहला विस्कोट किया,
''पिताजी बिटिया का संबंध तय कर आए हैं।"

चाय का कप होठों तक आते–आते बीच में रूक गया। कानों को सुन्न कर देने वाली यह खबर बेआवाज कई सपनों को ध्वस्त कर चुकी थी। बिटिया के रंग, ब्रश, कैनवास और उसके सारे चित्र इधर–उधर जली हुई अवस्था में बिखरें ठूंठ नजर आए।"[20]
पथिक जी ने अपनी कहानियों में ग्रामीण नारी के जीवन का चित्रण किया है। गाँव की नारियों की जिंदगी–चूल्हों–चौकों और पति–बच्चों तक ही सीमित रहती है। वह सामान्य शिक्षा ही कर पाती है तथा साक्षरता तक ही सीमित रहती है। गांव की स्त्रियों की इच्छाओं तथा स्वतंत्र विचारों को व्यक्त करने का मौका ही नहीं प्राप्त होता है। पथिक जी ने नारी जीवन की समस्याओं को उकेरा है। ग्रामीण सामाजिक जीवन के यथार्थ स्वरूप में नारी जीवन की वास्तविक स्थितियों का चित्रण मिलता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. यज्ञदत्त शर्मा (संपादक) प्रबंध सागर, अक्षरम् प्रकाषन, सोनपत, प्र.सं. 1989 पृ.सं. 153
2. सुधा बालकृष्णन, हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी के बदलते स्वरूप (षोध ग्रन्थ), संजय बुक सेन्टर, गोलघर वाराणसी पृ.सं 182
3. वही पृ.सं. 183
4. बक्खड़, चरण सिंह पथिक, मेरी प्रिय कथाएं, ज्योति पर्व प्रकाषन पृ.सं. 27
5. वही पृ.सं. 28
6. वही पृ.सं. 29
7. बक्खड़, चरण सिंह पथिक, मेरी प्रिय कथाएं, ज्योति पर्व प्रकाषन पृ.सं. 29
8. वही पृ.सं. 33
9. कलुआ, चरण सिंह पथिक, पीपल के फूल – अरू पब्लिकेषन प्रा.लि. पृ.सं. 16
10. वही पृ.सं. 18
11. वही
12. वही
13. कलुआ, चरण सिंह पथिक, पीपल के फूल – अरू पब्लिकेषन प्रा.लि. पृ.सं. 13
14. बक्खड़, चरण सिंह पथिक, मेरी प्रिय कथाएं, ज्योति पर्व प्रकाषन पृ.सं. 28
15. बीमार, चरण सिंह पथिक, बात यह नहीं, सूर्यप्रकाषन मंदिर बीकानेर, 2005 पृ.सं. 76
16. वही
17. वही
18. बीमार, चरण सिंह पथिक, बात यह नहीं, सूर्यप्रकाषन मंदिर बीकानेर, 2005 पृ.सं. 77
19. वही पृ.सं. 79
20. बेरी का पेड़, चरण सिंह पथिक,पीपल के फूल, अरूण पब्लिकेषन प्रा.लि. नई दिल्ली पृ.सं. 68